श्रीयुत

लाला ज्वालासहाय जी

की

आज कल के

साधुओं की करतूत

डा०
संख्या
तिथि
पुस्तकालय

को

दुर्गाप्रसाद

ने नागरी में किया

सृष्टिसम्वत् १९६०८५२९८८

वि० सम्वत् १९४५

लाहौर

विरजानन्द यंत्रालय

1888.

॥ ओम् ॥

आज/कल के साधुओं की करतूत

१—विदित हो कि एक उदासी साधु भोलाराम ने प्रतिज्ञा करते हैं कि हम मंत्र संहिता अर्थात् वेदों में से मूर्तीपूजा की आज्ञा और उस की विधि सिद्ध कर सक्ते हैं अतएव उस ने नगर भेरा में विज्ञापन पत्र भी लगवाये थे कि जिस किसी को वेदों में से मूर्तीपूजा की विधि का निश्चय करना हो वह हमारे पास आवे

परिग्रहण क्रमांक 1831

२—दैव योग से वह साधु लूधियाने में आये इस स्थान पर भी मूर्तीपूजा के विषय में अनेक प्रकार की मति होने से मूर्ती पूजनेवाले प्रसिद्ध करते थे कि ये साधु वेदों से मूर्तीपूजा का विधान दिखला सक्ते हैं

३—थोड़े से जिज्ञासु पुरुष उस साधु के पास गये और आदर से कहा कि यदि आप हम को मूर्तीपूजा की आज्ञा और विधि का वेदों से निश्चय करा दें तो आप की बड़ी कृपा होगी और यदि इस विषय में आप शास्त्रार्थ करना चाहें तो उस से सत्य का निर्णय होजाने से साधारण पुरुषों को ही लाभ होगा

दिया कि एक दूसरे के बतलाये हुये मध्यस्थ को दोनों पक्ष नहीं मानेंगे अतएव इस से उचित है कि मध्यस्थ केवल वेद हों और दोनों के व्याख्यान अर्थात् प्रमाण और युक्ति जो हों वह लिखी जावें और छपवा कर देश भर में प्रसिद्ध की जावें विद्वान् पुरुष आप सिद्धांत जान लेंगे

५—साधु ने कहा कि मैं दयानंद कृत वेदभाष्य को नहीं मानता उत्तर दिया कि अच्छा उस को हम प्रमाण नहीं करेंगे पर जब कि वह भाष्य अष्टाध्यायी महाभाष्य निघंटु निरुक्त आदि वेदांग उपांग और ब्राह्मण ग्रंथों के अनुकूल हो तो क्या फिर भी उस को आप नहीं मानेंगे उत्तर दिया कि तब भी नहीं मानूंगा फिर कहा कि इस से विदित होता है कि आप वेदांगों को भी नहीं मानते साधु ने कहा कि नहीं मानता पर महीधर का प्राचीन भाष्य प्रमाण मानता हूं और मूर्तिपूजा के विधान की सिद्धि महीधरभाष्य के प्रमाण से होगी

६—इस पर कहा गया कि महीधर आदि नवीन भाष्य दूषित हैं और धर्म्म के शत्रुओं के बनाये हुये हैं इस बात को सिद्ध करने के अर्थ स्वामी दयानंद जी की ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका दिखलानी चाही पर साधु ने उसे देखना न चाहा और कहा कि मैं ने भी सुना है कि दयानंद ने लिखा कि महीधरभाष्य में दूषित विषय हैं पर वास्तव में कोई विषय उस में नहीं है दयानंद ने अपनी ओर से अन्यथा है

निश्चय के लिये आप मूर्तीपूजा और उस की विधि पर शास्त्रार्थ करना चाहें तो हम लोग आप की सेवा में उपस्थित हों प्रथम तो साधु बातों में टालता रहा और कहने लगा कि काशी से मध्यस्थ बुलाओ फिर कहा कि मैं लिखित शास्त्रार्थ तो कभी नहीं करूंगा और न मैं उरदू बोलूंगा केवल संस्कृत बोलूंगा जब कहा गया कि पंडित गुरुदत्त जी भी संस्कृत बोल सक्ते हैं पर लोग क्या समझेंगे तब कहा कि अन्त में जो चुप होजावेगा उस की हार समझी जावेगी फिर उससे कहा कि अभिप्राय सत्य के निर्णय से है बटेरों को लड़ाने की क्या आवश्यक्ता है तब उत्तर दिया कि प्रथम मेरे एक शिष्य से विवाद करलो जब वह शिष्य हार जावेगा तब दूसरा आगे करूंगा निदान बहुत बात चीत के उपरांत अन्त को शास्त्रार्थ करना नहीं स्वीकार किया और मलक देसराज जी डिपटी इंसपेकटर पुलीस के पूछने पर भी शास्त्रार्थ करना अस्वीकार ही किया

१०—इस पर यह विचार हुआ कि जब शास्त्रार्थ को साधु अंगीकार नहीं करते तो शास्त्रार्थ छोड़ दिया जावे पर साधु ने जो यह कहा है कि स्वामी ने महीधरभाष्य के प्रति अपने पुस्तक में झूठा दोष लगाया है परंतु वस्तुत: महीधरभाष्य में कोई दोष नहीं है इस लिये अतीव आवश्यक्ता है कि मही धर के ही भाष्य से स्वामी जी के लेखकों को मिला करके लोगों को दिखलाया जावे कि स्वामी जी ने जो कुछ लिखा है वह ठीक लिखा है और अपनी ओर से कुछ नहीं लिखा

७—और निघंटु के विषय में साधु ने कहा कि दयानंद ने जो पांच पत्ते का निघंटु छपवाया है वह प्रमाणिक नहीं है क्यों कि उस ने अपने अनुकूलता के थोड़े शब्द छांट कर छपवा दिये हैं और शेष छोड़ दिये हैं इस पर कहा गया कि मानों स्वामी का निघंटु अपूर्ण है तो आप के पास जो पूर्ण निघंटु हो उसी को प्रमाण में लेलिया जावेगा तब साधु ने कहा कि मेरे पास निघंटु कोई नहीं है लोगों ने पूछा कि फिर आप निश्चय किस से करेंगे और करावेंगे कहा कि उस समय पर देखा जावेगा और हम को निश्चय की क्या आवश्यक्ता है फिर पूछा गया कि यदि आवश्यक्ता न थी तो मूर्तीपूजा की सिद्धि का वृथा वाद क्यों किया था उसने कहा कि मैं ने नहीं किया

८—इन बातों के पीछे साधु ने अपने एक शिष्य को बीच में बिठला कर कहा कि इन से बातें करो यह बड़े विद्वान् हैं कहा गया कि हम इन से बातें करने नहीं आये हैं इस पर साधु ने गरम होकर कुछ कठोर वचन मुख से निकाले जिस पर धार्मिक पुरुष वार्त्ता छोड़ कर उठ खड़े हुये और जो थोड़े प्रश्न मूर्तीपूजा की विधि को सिद्ध कराने के लिये लिख के साथ ले गये थे वैसे ही मोड़ लाये

९—इस के पीछे पंडित गुरुदत्त जी उस समय लाहौर से मियानी आगये थे उन से आज्ञा लेकर नगर के प्रतिष्टित पुरुष अर्थात् सिरदार महताब सिंह जी मलक मिहरचंद जी लाला हीरानंदजी चोपड़ा और मिहता ढेरामल जी साधु की सेवा में इस अभिप्राय से भेजे गये कि सत्य और असत्य के

११—जब इस अभिप्राय के लिये धार्मिक लोग साधु के स्थान पर पहुंचे तो ज्ञात हुआ कि बाटिका का द्वार बंद है और भीतर उस के सब स्थान में पानी छोड़ा हुआ है जिस से लोग भीतर न जा सकें इस लिये निराश होकर बाटिका के बाहर व्याख्यान की सम्मति की

१२—प्रथम यजुर्वेद के अध्याय २३ के आठ मंत्र जिन में राज और प्रजा आदि धर्मों की उतम शिक्षा है [जैसे कि राजा और प्रजा सम्मति से विद्या धर्म्म धन आदि सुखदायक पदार्थों को बढ़ावें) साधारण लोगों को पढ़कर सुनायेंगे और उन मन्त्रों के अर्थ जो शतपथ आदि प्राचीन ब्राह्मण ग्रन्थों में लिखे हैं वह भी लोगों को पढ़ कर सुनाये और महीधर ने अपने भाष्य में इन ही मन्त्रों का जो अर्थ अनर्थ रूप बना कर लिखा है वह भी पढ़ कर सुनाया गया जिस को सुन कर लोग बहुत चकित हुये यह दोनों ओर के अर्थ सम्मति के लिये आगे लिखे जावेंगे

१३—पुन: महीधरभाष्य और शत पथ ब्राह्मण आदि ग्रन्थों को जो एक ही प्रति में छपे हुए उपस्थित थे और दूसरी स्वामी जी की पुस्तक भूमिका जिस में उनका संक्षेप लिखा हुआ है दोनों को खोल कर लोगों से कहा गया कि साधु या और जो कोई चाहे इन दोनों का आपस में मिलाप कर के देख ले कि स्वामी जी ने अपनी ओर से कुछ भी नहीं लिखा साधु ने स्वामी जी की प्रति जो झूठा दोष लगाया था

इस का न्याय लोगों से चाहिये इन शब्दों से कि लोग अपने मन में आप ही इस बात का विचार करें

१४—पुन: वह प्रश्न जो मूर्तीपूजा की विधि के प्रति संस्कृत और फारसी में लिखे हुए थे लोगों को सुनाये गये और फिर बाबा प्रतापसिंह जी रईस मियानी को देदिये जिनकी वाटिका में साधु ठहरा हुआ था ये प्रश्न बाबा प्रतापसिंह जी को इस अभिप्राय से दिये गये थे कि साधु की सेवा में धर कर प्रार्थना करें कि हमारी इच्छा कुछ व्यर्थ विवाद की न समझनी चाहिए प्रत्युत केवल यह अभि प्राय है कि यदि साधु जी अपनी विद्या और ज्ञान से इन प्रश्नों के उत्तर ऐसे योग्य और वेद के प्रमाण सहित लिखें जिस से मूर्तीपूजा न माननेवाले को उसका निश्चय होजाय तो लोगों पर बड़ा उपकार और साधु का बड़ा यश होगा

१५—फिर जो२ हानि मूर्तीपूजा के प्रचार से देश को पहुंच रही हैं वह भी लोगों को सुनाई गईं और पण्डित गुरुदत्त जी दोनों पुस्तक अर्थात् महीधरभाष्य और स्वामी जी की भूमिका को हाथ में लेकर उद्यत थे कि दोनों का पाठ मिलाकर के लोगों को सुनावें और फिर व्याख्यान प्रारम्भ करें कि इतने में साधु ने इस मनोरथ से कि महीधरभाष्य की भूमिका से मिलाने से उनके झूठ की काला खुल जावेगी पहिले दिन के सदृश अपने उसी शिष्य को थोड़े से लोगों के साथ में सभा में भेजदिया

१६—पण्डित गुरुदत्त जी ने साधु के शिष्य की ओर देख कर कहा कि दोनों ग्रन्थों के लेख को मिलालो पर साधु के शिष्य ने मिलाने से पीठ देकर के कहा कि जो मनुष्य वेदांगों को न जानता हो वह वेद के विषय पर व्याख्यान देने का अधिकारी नहीं है इस पर उस से कहा गया कि तुम अपने इष्ट की शपथ खा कर कहो कि तुमने वेदांगों को कहां तक पढा है

१७—इसका उत्तर तो उस से कुछ न बन पड़ा पर उलटा प्रश्न पण्डित गुरुदत्त जी से किया कि तुम ही बतलाओ कि तुमने क्या पढ़ा है

१८—पण्डित गुरुदत्त जी ने अपने पढ़े हुए वेदांग का व्योरा बतलाया और साधु के शिष्य से कहा कि तुम भी प्रत्येक वेदांग का नाम जो तुमने पढ़ा है भिन्न २ करके बतलाओ और कहो कि तुमने महाभाष्य पढ़ा है या नहीं इस का तो कुछ भी उत्तर साधु के शिष्य ने न दिया पर उलटाका प्रश्न किया कि जब कि तुम मूर्तीपूजा के विधान की सिद्धि प्रमाण वेदों से मांगते हो तो प्रथम बतलाओ कि प्रमाण की सिद्धि में क्या प्रमाण है जिसका अर्थ यह है कि वेदों के प्रमाण होने में क्या प्रमाण है

१९—इस प्रश्न से ही बुद्धिमान् लोग समझ सक्ते हैं कि जब साधु का आप यह प्रण था कि मैं वेदों से मूर्तीपूजा और उसकी विधि को सिद्ध करूंगा तो वेदों ही के प्रमाण

होने का प्रमाण मांगना उसको योग्य न था क्योंकि यदि वेद प्रमाण न हों तो वह मूर्तीपूजा किस से सिद्ध करेगा मानो इस वितंडा से साधु के शिष्य ने अपने प्रण को आप ही भङ्ग कर दिया जाना जाता है कि साधु ने शिष्य को विशेषत: यही समझा कर भेजा था कि ऐसे २ प्रश्न करके शास्त्रार्थ को टाल देना उजागर है कि वेदों के प्रमाण होने का प्रमाण मांगना नास्तिकों के बिना और किसी का काम नहीं है अन्तरीय अभिप्राय तो उनका यह था कि किसी प्रकार और २ बातें और झगड़े बीच में आजावें और मूर्तीपूजा का निर्णय और महीधरभाष्य का वेद भूमिका से मिलाना न होने पाये क्योंकि साधु को चिन्ता थी कि मूर्तीपूजा वेद से सिद्ध न होगी और उसका झूठ प्रकट हो जावेगा

२०—इस पर पण्डित गुरुदत्त जी ने साधु के शिष्य से कहा कि तुम ने अपनी प्रतिज्ञा की हानि की है क्योंकि उस उलटा विषय छेड़ दिया अर्थात् तुम्हारी प्रतिज्ञा वेदों से मूर्ती पूजा सिद्ध करने की थी उस को छोड़ कर प्रसङ्ग विरुद्ध बात चीत की इसलिए आगे हम तुम से शास्त्रार्थ नहीं करेंगे

२१—इसके पश्चात् साधु के शिष्य ने कहा कि मेरी एक बात तो और सुन लो पर जब यह निश्चय हो चुका था कि वह केवल व्यर्थ और अप्रसंग बात चीत करके व्याख्यान का काल टालना चाहता है इसलिए उसको फिर बोलने न दिया और व्यख्यान का आरम्भ किया गया परन्तु आंधी आगई और व्याख्यान न होसका तब सभा विसर्जन हो गई

२२—लोगों के उठ जाने के उपरांत मलक देसराज जी डिपटी इंसपेक्टर पुलिस उपवन के भीतर साधु के पास गये और महीधरभाष्य का जो विषय सुना था उस का वर्णन उन से किया साधु ने स्वीकार कर लिया कि हां सतयुग में सन्तान उत्पति के लिये घोड़े के लिंग को भग से स्पर्श कराते थे पर जब डिपटी इंसपेक्टर जी ने कहा कि मनुष्य और घोड़े की भिन्न जाति होने के कारण यह बात अतीव असंभव है तो साधु ने इसका कुछ उत्तर न दिया

२३—यजुर्वेद अध्याय २३ के मन्त्रों पर महीधर ने जो कुछ भाष्य लिखा है उसका हिन्दी में अनुवाद किसी राज-पुरुष का कराया हुआ सरदार अतर सिंह सी०एस०आई० लुधियाना निवासी के पुस्तकालय में है उस में सत्य असत्य निर्णय करने वालों को उचित है देखें कि कैसा महीधर ने झूठा निर्लज्ज अर्थ करके वेद के सत्य धर्म को विनष्ट करने का श्रम किया हैं। वह मन्त्र इस पुस्तक में पूर्व छपे थे परन्तु राज्य से आज्ञा हुई कि एक उदहारण से अधिक लिखना नहीं उचित है पर हम अब एक को भी नहीं लिखते केवल उन भाईयों से प्रार्थना करते हैं जिन को हमारी बात में संदेह हो कि वे कृपा करके उक्त हिन्दी अनुवाद में महीधर का अर्थ देख लें। देखना मात्र ही विचार शीलों के लिये महीधर का पुष्कल खंडन है ।

स्मरण रहे

कि आज कल वेद धर्म को मनुष्यों ने ऐसा विगार लिया है कि वह प्राचीन वेद भाष्य से बहुत ही प्रतिकूल हो गया है इसी कारण से विचारवान् पुरुष इस समय में जब कि संस्कृत का प्रचार अत्यन्त न्यून हो गया है जिस से वेद नहीं समझ में आता स्वार्थियों के झूठे लज्जित अर्थों को सुनकर वेद धर्म त्याग देते हैं और जो कि सत्य धर्म के उठ जाने से पाप फैलता और दुःख होता है सो यही दशा आज काल इस देश निवासियों की हो गई है संध्या हवन और अन्य वैदिक सुखदायी कर्म उठ गये लोग गायत्री ही का अर्थ भूल गये जिस में परमेश्वर की स्तुति और ध्यान था फिर मनो कल्पित बातों में पड़ कर अपनी बहुत हानि कर बैठे इस दशा को देख स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने प्राचीन ऋषियों के अनुसार वेद के भाष्य को किया जिस से अब लोग वेद के सत्य धर्म में प्रवृत्त होते जाते हैं।

२४—विदित हो कि महाभारत के पश्चात् वेद विद्या शतपथ आदि सत ग्रंथों और वेदांग और उपांगों का पढना कम हो गया था जिस के, कारण बौध और जैन आदि के आक्रन्दन हुये और इन सत्यधर्म प्रचारक ग्रंथों का प्रचार दूर हो जाने के कारण मानो व्यभिचार आदि दोषों की प्रवृत्ति का प्रारम्भ होगया ऐसे समय में वेद विद्या और सत्य धर्म के शत्रु नास्तिक वैरागी दुराचारी महीधर

आदि कामी लोग वेदों का मनघटित भाष्य सुगम भाषा में लिखने लगे और अपने दोषों पर मिट्टी डालने के अभिप्राय से उनने वह धूर्तता की कि मंत्रों के यथार्थ अर्थों के विरुद्ध निरे झूठे और ऐसे असत्य अर्थ लिख मारे कि जो सभ्यता के अतीव विरुद्ध हैं और जिन के सुनने से साधारण लोग भी लज्जित हो जाते हैं और शोक प्रकट करते हैं ऐसे अर्थ लिखने से मानो महीधर आदि लोगों ने जगत में निर्लज्जता फैलाई और व्यभिचार की नीव डाली अर्थात् लोगों पर प्रकट किया कि यज्ञ आदि वेद कर्मों में व्यभिचार विदित है परन्तु वस्तुतः वेदों में ऐसी असभ्य बातों का चिन्ह तक भी नहीं है

२५—उस समय में जो लोग अल्पविद्य अल्पबुद्धि और अल्पश्रम और आलसी थे जिन के लिए शतपथ आदि ग्रंथों और वेदांगों का पढना और समझना और वेदार्थ का ज्ञान उपार्जन करना कठिन था वह आलसी लोग अवश्य महीधर आदि सुगम नवीन भाष्यों पर झुके और सत्य ग्रंथों की प्रवृत्ति शनैः२ जाती रही प्रायः महीधर आदि भाष्यों ही का प्रचार होगया

२६—अधिक पुष्टि महीधर आदि भाष्यों ही को उन स्वार्थी देश और जाति के शत्रु ब्राह्मणों से हुई जिन्होंने उन झूठे भाष्यों के लेखानुसार अश्वमेध यज्ञ का अर्थ शतपथ ब्राह्मण के प्रजापालन के अर्थ से विरुद्ध घोड़े का बध मान करके उस के अनुकूल बनावटी कथा लिख दीं और जिन मंत्रों के अर्थों से दिन और रात के संबन्ध का वर्णन और वर्षा की व्यवस्था प्रकट होती है उन मंत्रों के उलटे अर्थ बना कर

उन से ब्रह्मा और इन्द्र का अपनी लड़की और गुरुपत्नी के साथ व्यभिचार करना लिख कर लज्जा का मुख काला किया और कई प्रकार की पोपलीला इन महीधर आदि भाष्यों ही के आशय पर रचलीं और जहां तक हो सका महीधर आदि भाष्यों को प्रचार करने और शतपथ आदि ग्रंथों के दबाने में प्रयत्न किया ताकि पोपलीला का रहस्य न खुल जावे और यह बात इस से सिद्ध है कि स्वामी जी से पूर्व किसी ने भी शतपथ आदि ग्रंथों और महीधरभाष्य का विरोध लोगों को विदित नहीं किया था

२७—दूसरी ओर से दुराचारी लोगों ने इन्हीं मिथ्या भाष्यों के लेख पर तंत्रशास्त्र बना कर मैथुन मदरा और मांस को तीर्थ और मुक्ति का साधन ठहराकर झूठे मार्ग भ्रष्ट आचार और व्यभिचार चलाये और माता भगिनी लड़की और भुवा के साथ समागम करना निर्दोष ठहरा कर मनुष्य की सुशीलता को नष्ट कर दिया और धर्म्म का सत्यानाश करके भारतकी पवित्र सुकीर्त्तित भूमि को व्यभिचार से कलंकित कर के सब संसार की दृष्टि में इस को विगर्हित कर दिया जिस का फल प्रकट है कि यह देश जो अपने वैभव के समय में विद्या धर्म्मधन सद्गुण और सुख का भंडार था अब वह अविद्या अधर्म्म अनीश्वरवाद दारिद्र द्वेष आलिस्य और प्रमाद से भरा दिखाई देता है जिस में नाना प्रकार के वेदविरुद्ध मत फ़ैलने से वैदिक धर्म्म का प्रचार नाम मात्र रह गया है

२८—फिर दूसरे देश के विद्वान् यूरोपियन आदि ने भी वेदों के अनुवाद अपनी२ भाषा में इन महीधर आदि बनावटी

भाष्यों ही से किए और यदि भारत देश के युवान और पठित लोगों को वेदों के विषय का ज्ञान उपार्जन करने का अवकाश मिलता रहा है तो वह भी उन ही अङ्गरेजी भाष्यों को देखते रहे हैं जिनके पढ़ने सुनने से मनुष्य का निश्चय वेदों के सत् और उन के ईश्वरोक्त होने से शीघ्र उठ जाता है और लोग उनके विरुद्ध हो जाते हैं और विशेषत: दूसरे मत के विद्वानों ने वेदों के कच्चे और असम्भव होने पर नाना प्रकार के उपाख्यान बना कर लोगों की रही सही श्रद्धा को भी मिटा दिया है इससे सब जगत् की दृष्टि में वेद तुच्छ हो गये हैं

२९—अब मूर्ख निरक्षर भट्टाचार्य्य ब्राह्मण लोग साधुवों की चापलूसी करते और उनके आगे पीछे फिरते हैं कि वह मूर्त्ति पूजा की सिद्धि में उनको सहायता करें इसी प्रकार मंदबुद्धि पत्थरपूजक सेवक इस असत् विचार में मरे जाते हैं कि यदि मूर्त्तिपूजा असत् होगई तो उनकी जन्मभर की मूर्त्ति पूजा का श्रम नष्ट हो जायगा और वह इस बात को मुख्य रख कर सत्य और असत्य के निर्णय की कुछ इच्छा नहीं करते और वैसे ही मान और बड़ाई के अभिलाषी पेट पालू और नाम के साधु विचारते हैं कि यदि हम इस बात में ब्राह्मणों की सहायता करेंगे तो ब्राह्मण लोग भी घर२ में हमको महान् विद्वान् और महात्मा प्रसिद्ध करके हमारी प्रभुता को और भी विख्यात करेंगे और मूर्ख अपठित सेवकों में भी मान बना रहेगा इसलिए ऐसे साधु लोग मूर्त्ति पूजा की सिद्धि के लिए महीधर आदि भाष्यों का आश्रय लेते फिरते हैं क्या जिन झूठे भाष्यों से इस प्रकार वेदों की हानि हुई है और अगणित

चोटें धर्म्म को पहुंची और जिन से देश में व्यभिचार और अनीश्वर वाद फैला और मदरास बंगाल आदि में घरों के घर ईसाई हो जाने से कुलों के नाम मिट गये शतश: वृद्ध माता पिता स्त्री और विधवा जिनके इकलोटे बेटे पुत्र होन युवा स्त्रियों को छोड़ कर ईसाई होगए हृदय का रुधिर आंसुवों से निकाल२ और आहें भर२ कर मर गयीं और कई अबतक तड़प रही हैं उन भाष्यों के खंडन और झूठ शतपथ आदि ब्राह्मण ग्रंथों से भली प्रकार सिद्ध होने पर भी जो लोग उन बनावटी भाष्यों को प्रमाण मानते या मूर्ख लोगों को उन में निश्चय कराते हैं उनको धर्म्म के रक्षक कहना चाहिये या धर्म्म के शत्रु

३०—देखो श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का यह निश्चय है कि वेद ईश्वर-उक्त पुस्तक हैं और यत् ईश्वर सर्वज्ञ है और उसमें भूल संभव नहीं है अतएव वेद स्वत: प्रमाण हैं अर्थात् उन की सत्यता की सिद्धि में अन्य के प्रमाण की आवश्यक्ता नहीं है और शतपथ आदि ब्राह्मण ग्रंथों को भी स्वामी जी सत्य धर्म्म के पुस्तक मान कर बड़े आदर से उन का नाम लेते थे परन्तु ये ब्राह्मण ग्रंथ ऋषियों के बनाए वेदों के टीका हैं और ऋषि लोग मनुष्य होने से सर्वज्ञ नहीं हो सक्ते हैं और मनुष्य में भूल सम्भव ह इसलिये वे ग्रंथ परत: प्रमाण अर्थात् वेदों के अनु कूल होने से प्रमाण माने जाते हैं इस पर सब भारतवर्ष के ब्राह्मण विशेत: काशी के पंडित लाठियां उठाए हुये हल्ला मचाते और प्रतिमास पुस्तकें इस समय तक छापते हैं कि स्वामी कौन था जो ब्राह्मण ग्रंथों को भी वेद और स्वत: प्रमाण

नहीं मानता फिर न जाने कि लोग मूर्तिपूजा की सिद्धि के अभिप्राय से शतपथ आदि ब्राह्मण ग्रंथों के विरुद्ध महीधर आदि दूषित भाष्यों को जिन का ऊपर सविस्तार वर्णन हुआ है क्यों प्रमाणिक मानते हैं

३१—जिस प्रकार भोला राम साधु ने मुख फाड़ कर झूठ कह दिया था कि महीधरभाष्य में दूषित विषय कोई नहीं है और निघंटु भी स्वामी ने अपने अनुकूल शब्द चुन कर छपवाया है और उस का बनाया वेद भाष्य प्रमाणिक नहीं है पर शोक है कि वस्तुत: उसने न तो कभी महीधर भाष्य को पढ़ा और न यास्क मुनि कृत निघंटु का दर्शन किया और न कभी स्वामी जी के बनाये वेदभाष्य को देखा है इसी प्रकार काशी से करांची और बम्बई तक लाखों अविद्वान् ब्राह्मण और साधु गीदड़ों के सदृश वृथा टायें टायें मचा रहे हैं और कहते हैं कि स्वामी ने वेदभाष्य अशुद्ध रचा है और मनघटित अर्थ किये हैं परन्तु जब कि वेदों ही पर धर्म्म की जड़ है और वेदों के अशुद्ध अनुवाद से धर्म्म का सत्यानाश होता है जिस धर्म्म की आड़ में करोड़ों मुष्टंडे ब्राह्मण और साधु लोग दीन गृहस्थियों का रुधिर जोक की सदृश चूस रहे हैं और नूतन मक्खन और बादामों की सर्दाई पीते हैं जलेबी और कचौरी और रबड़ी और दुग्ध से भिन्न भोजन गले से नहीं उतारते हैं मैं पूछता हूं कि जब यह लोग देखते हैं कि स्वामी जी का भाष्य अशुद्ध है तो एक२ मंत्र की व्याख्या की अशुद्धि निकाल कर देश में प्रकट क्यों नहीं करते और जो कुछ स्वामी जी ने वेदांगों के विरुद्ध लिखा हो

वह मनुष्यों को क्यों नहीं दिखलाते पर कैसे दिखलायें सत्य पूंछो तो वे विद्या और बुद्धि से हीन हो रहे हैं केवल मुख से बक२ कर सत्य को झूंठ और झूंठ को सत्य कह देना सुलभ है परन्तु प्रमाणों से सिद्ध करना मासी का घर नहीं है ये लोग तो स्वार्थ से पुराणों ही में ऐसे मग्न हैं कि वैदिक ग्रंथों का नाम तक लेने से लज्जित होते हैं पर विद्या कहां जिस से वैदिक ग्रंथों को पढें और वेदार्थ को समझ कर स्वामी के भाष्य की अशुद्धि निकाल सकें बहुधा इन लोगों ने स्वामी जी के भाष्य को तो देखने तक की शपथ खाई हुई है जैसे भोलाराम ने कह दिया था कि स्वामी का भाष्य अष्टाध्यायी महाभाष्य निरुक्त और निघंटु के अनुकूल भी हो तो मैं उस को नहीं मानूंगा इस से बढ़ कर कोई द्वेष हो सक्ता है और जब यह दशा है कि यदि स्वामी ने लिखा हो कि परमेश्वर सत्य है तो आग्रह से लोग उस से भी पलट जायें तब सत्य और धर्म्म का निर्णय कब हो सक्ता है विद्वान् लोग सोचें कि यदि वास्तव में स्वामी जी का भाष्य वेदांगों के अनुकूल न होता और उस में अशुद्धि होतीं और इन लोगों का हल्ला गुल्ला सच्चा होता और हट और आग्रह से न होता तो क्या ये लोग उन के प्रकट करने में प्रयत्न न करते

३२—जाना जाता है कि साधु भोलाराम को भी नवीन वेदांत के ग्रंथ आत्मपुराण आदि से भिन्न२ वेद विद्या में गम्यता नहीं है वेदों के जानने का तो क्या ही कहना है

(१) उपवेद अर्थात् अयुर्वेद धनुर्वेद गन्धर्ववेद और अर्थवेद का नाम तक भी तो इसी पुस्तक से कंठ करें।

(२) वेदांग अर्थात् शिक्षा कल्प व्याकरण निरुक्त छंद और ज्योतिष इन छः शब्दों को भी कहीं ग्रंथों ही में लिखा हुआ देखा होगा मूल ग्रंथों के दर्शन तक के होने का भी दृढ विश्वास नहीं हो सक्ता

३ उपांग अर्थात् न्याय योग वेदांत मीमांसा वैशेषिक सांख्य के स्थान कुछ विरुद्ध ग्रंथों का अभ्यास किया हुआ है अर्थात् गोतम के न्याय सूत्रों के स्थान तर्कसंग्रह जानते हैं और उपनिषद् और व्यास सूत्रों के प्रतिकूल नास्तिकों के बनाये ग्रंथ आत्मपुराण और विशिष्ट आदि कों के नाम से धूर्तों के बनावटी योगवशिष्ट आदि ग्रंथ और पंचदशी आदि अवश्य जानते होंगे अन्य ग्रंथों का तो क्या कहना इस बात का निश्चय यों होता है कि ऊपर लिखे सत् ग्रंथोंमें से किसी एक का भी पढना पढ़ाना सुनना सुनाना उस के यहां नहीं होता और न यह ग्रंथ उस के पास हैं प्रत्युत महीधर आदि भाष्य को भी तो उस ने नहीं देखा होगा हां इतना निश्चय होता है कि मूर्तिपूजा की सिद्धि के अर्थ किसी ब्राह्मण ने कोई विशेष स्थान महीधरभाष्य का उन को बताया होगा यदि महीधरभाष्य को भी अच्छी प्रकार देखा होता तो कदापि हट न करता कि उस में दूषित विषय नहीं हैं इसी प्रकार यदि निघंटु ग्रंथ का भी दर्शन किया होता तो कभी हट से न कहता कि स्वामी जी का छपवाया हुआ निघंटु अपूर्ण है जब कि इस समय कलकत्ता में यास्क जी का जो निघंटु छपा है यह भी उतना ही है जितना स्वामी जी का छपवाया हुआ है तब साधु भोलाराम को उचित है

कि उस निघंटु से अधिक यदि कोई यास्क जी का निघंटु कहीं हो तो निकाल करके स्वामी जी के निघंटु को अपूर्ण सिद्ध करें

३३—यदि साधु को वेद विद्या का कुछ भी अभ्यास होता तो अवश्य था कि विद्या बृद्धिकी और वैदिक कर्म संध्या अग्निहोत्र आदि की प्रवृर्ति कराता आप झूंठ न बोलता औरों को भी झूंठ बोलने से रोकता आप क्रोध अभिमान तथा द्वेष का त्याग करता औरों से भी कराता ब्रह्मचर्य की रक्षा पर पूरा ध्यान देता सूक्ष्म कोमल शांतिदायक भोजन करता जो पुष्टि कारक विषय उत्पादिक भोजन हैं जिन से विरक्त महात्मा सदैव पृथक् रहते हैं उन को न आप खाता न विद्यार्थियों को खाने देता अपने डेरा पर उचित अनुचित समय में स्त्रियों का आना बंद करता न कि हर समय हे श्वेतकेतु हे श्वेतकेतु संसार त्रिकाल में मिथ्या है इसी का घोषन करता रहता क्या इस नास्तिक उपदेश से बुद्धिमान् लोग विचार नहीं कर सक्ते कि जगत् ही वेद और शास्त्र हैं जगत् ही तो यज्ञ आदि सुकर्म और धर्म हैं और जगत् ही तो तुम्हारे इस उपदेश का भी होना है जब कि जगत का होना ही झूंठ कहते हो तो क्या इस का स्पष्ट अर्थ यह नहीं है कि वेद यज्ञ उपासना और सुकर्म भी सब के सब झूंठ हैं इन ही नास्तिक शिक्षाओं से अन्त को यह सिद्धान्त निकला करता है कि जब सावधान लोग जगत और सुकर्म वा कुकर्म सब को झूंठा और निष्फल सुन लेते हैं तो सुकर्म करना (जो

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु परिग्रहण क्रमांक ...1572...

कठिन होता है) छोड़ देते हैं और कुकर्मों में प्रवृत्त हो जाते हैं

३४—लिखित प्रश्न जो बाबा प्रताप सिंह जी मियानी के रहीस द्वारा बावा भोलाराम को दिये गये थे और जिन का उत्तर देने से उक्त बावा ने सर्वथा अनङ्गीकार किया था नीचे लिखे जाते हैं अब भी कुछ नहीं बिगड़ा पर यदि साधु को वैदिक विद्या में पहुंच है और उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार वेदों में मूर्तिपूजा और उस की विधि है तो उन मंत्रों को जैसा कि प्रश्नों में छापा गया है भिन्न२ लिख कर प्रत्येक के पदच्छेद अन्वय और पदार्थ लिखकर अष्टाध्यायी महाभाष्य निरुक्त आदि के प्रमाण देकर अपनी विद्या और प्रतिज्ञा को सुफल करे और जेकर हम को उत्तर देनेसे लज्जित होता है तो कुछ भय नहीं उत्तर का विषय समाचार पत्रों में विज्ञप्त करे पर उचित होगा कि प्रथम प्रश्न लिख कर उस के उपरान्त उत्तर लिखे

१ प्रश्न—यदि चारो वेदों में कोई मंत्र ऐसे हैं कि जिन में ईश्वर की आज्ञा हो कि मनुष्य लोग ईश्वर के स्थान में मूर्ति बना कर उस की पूजा किया करें और वह मूर्ति अमुक छवि या रङ्ग की और अमुक आकार या वस्तु की हो या कोई विधि मूर्ति के बनाने और पूजने की हो तो वह मंत्र लिखें

२ प्रश्न—नीचे लिखी हुई विधि बिदोक्त है वा बनावटी यदि वेदोक्त है तो उस के विधायक मंत्र लिखें अर्थात् मूर्ति को स्नान कराना फूल धूप दीप नैवेद्य चढ़ाना वस्त्र भूषण पहनाना शंख घड़याल ढोलक आदि बजाना चाहिये

३ प्रश्न—विष्णु और शिव जी की मूर्ति जो लोग इस प्रकार मान कर पूजते हैं कि विष्णु क्षीरसमुद्र के मध्य शेष नाग पर विराजमान हैं लक्ष्मी चरण मलती है नाभिकमल से ब्रह्मा निकले हुए हैं और शिव बैल पर चढ़े हैं पार्वती साथ है गले में रुंड माला है माथे पर चंद्रमा है इत्यादि इन का विधान जिस२ वेद मंत्र में हो वह सब मंत्र अर्थ सहित कृपा करके लिखें पर अर्थ वह हो जो वैदिक व्याकर्ण अर्थात् अष्टाध्यायी महाभाष्य और निघंटु वा निरुक्त आदि वेदांगों से सिद्ध हो

४ प्रश्न—यह भी अच्छी प्रकार समझाना होगा कि निराकार और सर्वव्यापक की मूर्ति किस प्रकार सम्भव है

प्राणप्रतिष्ठा के मंत्र वैदिक हैं या बनावटी यदि वैदिक हैं तो वह मंत्र भी पता और अर्थ के सहित लिखें और यह भी लिखें कि प्राणप्रतिष्ठा से मूर्ति में प्राण आजाते हैं या नहीं यदि आजाते हैं तो उस का प्रमाण क्या है और यदि नहीं आते तो वह मंत्र क्योंकर सत्य माने जावें

५ प्रश्न—यह भी लिखना चाहिये कि मूर्ति के कौन२ गुण ईश्वर के गुणों के अनुकूल हैं जिस से मूर्ति पर ध्यान पकाया हुआ और अभ्यास किया हुआ ईश्वर के ध्यान में सहायता देगा

जहां तक देखा जाता है ईश्वर और मूर्ति के गुणों में प्रतिकूलता अर्थात् विरोध ही प्रकट है

ईश्वर के गुण	मूर्ति के गुण
१ सर्वव्यापक	१ एक देशी
२ ज्ञानस्वरूप वा सर्वज्ञ	२ सवर्था जड़
३ अपरिणामी	३ परिणामी
४ सर्वशक्तिमान्	४ अशक्त

६ प्रश्न—कैचित् लोग अलंकारों से ईश्वर की मूर्ति सिद्ध करने पर बहुत बल देकर उस को मूर्तिमान् सिद्ध किया चाहते हैं पर सिद्ध नहीं कर सक्ते क्योंकि मूर्तिमान् पदार्थ दृश्य होता है और चर्म चक्षु: से देखा जाता है पर वे उस को नहीं दिखला सक्ते भला यदि वे किसी ऐसे स्थान पर उस को उपस्थितमानते हैं कि जहां पर जाकर दिखलाया नहीं जा सक्ता तो उस स्थान पर उस का मिलना जिस वेद मंत्र से सिद्ध होता है वह मंत्र दिखला देना तो कठिन नहीं है भला इस को भी जाने दीजीये पर यह तो अवश्य दिखलायें कि उन की मानी हुई सच्ची मूर्तियों के स्थान में मनुष्य की बनाई हुई धातु पाषाण मृत्तिका आदि की मूर्ति पूजने की किस वेद मंत्र में आज्ञा है

७ प्रश्न—ईश्वर की मूर्ति मानने से ईश्वर के निराकार और अद्वितीय आदि लक्षण जो वेदों में लिखे हैं वे निष्ट हो जायें गे इस का क्या उपाय है

८ प्रश्न—"गणानांत्वा" यह मंत्र यजुर्वेद के २३ अध्याय का १९ वां मंत्र है इस मंत्र के महीधरभाष्य के अर्थ में घोड़े से व्यभिचार और शतपथ और ऐतरेय ब्राह्मण ग्रंथों में प्रजा

पालन आदि हैं गणेश पूजा अर्थात् लकीरों का गणेश वना कर उस पर भेंट चढ़ाना किस आशय से लिया गया है

९ प्रश्न—केचित् पुरुष मूर्तिपूजा को ईश्वरके ज्ञानकी प्राप्ति की प्रथम पोड़ी कहते हैं यह अप्रमाण होनेसे भिन्न प्रत्यक्ष में असत्य जाना जाता है जब तक प्रथम पोड़ी न छोड़ी जावे तब तक दूसरी पर चढ़ना नहीं हो सक्ता और कभी किसी मूर्तिपूजक को मूर्तिपूजा छोड़ कर ऊपर चढ़ते नहीं देखा पर सब के सब अपने जन्म भर तो क्या केचित् पीड़ियों से उसी पोड़ी पर बेटे हुये और दूसरों का मार्ग रोके हुये देखे जाते हैं

१० प्रश्न—जब से मूर्तिपूजा चली है तब से निराकार सर्वाधार सर्वव्यापक सर्वान्तरयामी जगत् पिता परमेश्वर का आसरा त्याग कर जड़ पाषाण आदि मूर्तियों पर भरोसा रखने के दोष से जो कुछ दुःख हुये हैं और जितना भारतवर्ष का सत्यानाश हुआ है संक्षेप से यहां दिखलाया जाता है

(१) सातसौ वर्ष के लगभग हुये कि कुतबउद्दीन एबक के समय से इस समय तक आर्यावर्त के निवासियों में से जिन की संख्या २५ करोड़ के निकट है सत करोड़ के लगभग मुसलमान हो गये इसी प्रकार और शेष जातियों में से अंगरेजी राज्य के थोड़े काल ही में लाखों ईसाई हुए गये यह प्रताप मूर्तिपूजा का है क्योंकि मुसलमान और ईसाई भा लोगों को यही कह कर भ्रमाया करते हैं कि तुम्हारा क्या

धर्म्म है जिस में पाषाण मट्टी धातु और काष्ट की अपने हाथ से बनाई हुई मूर्तियों को ईश्वर समझ कर पूजते हैं जब कि सातसौ वर्ष के अन्तर में चोथे भाग से अधिक लोग अपने धर्म्म से अलग हो गये तो जो तीन भाग शेष रहे हैं उन के ईसाई और मुसलमान होजाने के लिये कितना समय चाहिये आप गणित से जान लीजिये

२ मूर्तिपूजा ने केवल इतने लोग मुसलमान और ईसाई ही नहीं बना दिये पर जो शेष रहे उन को भी पाषाण जैसा जड़ और अपने जैसा अशक्त बना दिया

१ देखो सब से बड़ी मूर्ति काशी विश्वेश्वरनाथ जी की संपूर्ण विराजमान होते हुये भी करोड़ों हिन्दु और लाखों सैनिकों की उपस्थिति में एक मुसलमान राजा औरंगजेब ने मुट्ठी भर सेना से उन का निरादर किया मंदर गरा कर वहां मसजदें बनवाईं और लाखों गायें कटाईं और पूजारियों की अप्रतिष्टा जितनी हुई लिखने से बाहर है कैंचित् पुरुष व्यर्थ युक्ति देते हैं कि औरंगजेब पिछले जन्म का बड़ा प्रतापी था और उस को वर मिला हुआ था और यह कहते भी नहीं लज्जित् होते कि औरंगजेब के भय से विश्वेश्वरनाथ जी भाग कर कूप में जा गिरे देखना चाहिये कि सेवाजी महाराष्ट्र एक साधारण मनुष्य था उस ने औरंगजेब का जितना सामना किया था मूर्ति से तो उतना भी न हो सका और औरंगजेब को वर मिलने का यह उत्तर है कि वह आप मर गया राज्य उस के वंश से जाता रहा परन्तु मंदिर के स्थान मसजद अब तक बनी है मूर्ति अब किस का भय कर रही है

२ काशी में जितना व्यभिचार होता है वह सब को विदित है यदि दुराचार और पाप की निवृति का प्रबन्ध नहीं हो सक्ता है तो मूर्ति किस रोग की औषधि है

३ मुसलमान राजों ने सहस्रों पूजारियों को नास्तिक पाषाण पूजक ठहरा कर मार डाला और महान् हनन हुये पुजारी हाय२ पुकारते रहे परन्तु मूर्ति से किसी स्थान पर मक्खी वा मच्छर के बराबर सहायता न मिली प्रत्युत् मूर्ति के प्रभाव से धनाढ्यों की कन्या दो२ रुपये पर गजनी में बिकीं और महमूदगजनवी ने थोड़ी सी सेना से इन लाखों को परास्त किया जो कि परमेश्वर को छोड़ कर मूर्ति पर भरोसा रखते थे यहां तक कि आप सोमनाथ जी की मूर्ति की प्रथम नाक तोड़ी फिर शरीर के टुकड़े२ कर के मक्का और गजनी आदि की मसजदों की पोडियों के नीचे लगवा कर प्रतिदिवस लातों से रूंधते थे क्या इस से अधिक कोई और मानहानि होती है पर मूर्ति और मूर्तिपूजक दोनों सच्चे पत्थर सिद्ध हुये कीर्ति-उपार्जन करना तो क्या अपने पहले नाम को भी खो बैठे

मूर्ति और मूर्ति पूजने वालों के प्रताप का वर्णन

१ काशी जी का नाम इसलामाबाद

२ प्रयाग राज का नाम अलाहाबाद

३कोइल का नाम अली गढ़ रखा

४ हस्तिनापुर का नाम शाहजहानाबाद रखा

५ मथुरा का नाम फैजाबाद रखा शतशः मंदिर गिरवाये और मसजदें बन वाईं

पंजाब के देहधारी सिक्खों का प्रताप जिन का भरोसा निराकार परमेश्वर पर था न कि मूर्ति पर

१ रसूलनगर का नाम रामनगर रखा
२ अलीगढ़ का नाम अकालगढ़ रखा
३ मसजदों का नाम मस्तगढ़ रखा
४ कोई मंदिर नहीं गिरने दिया

४ मुसलमान राजों ने मूर्तिपूजा के कारण हिंदुवों को काफर ठहरा कर जोर दुर्दशायें उन की कीं उन के इतिहास साक्षी हैं इतनी हानि मूर्तिपूजा से भारतवर्ष को हुई कि भला यदि किसी की जान में कोई लाभ मूर्तिपूजा से देश को पहुंचा हो तो वह अवश्य दिखलाना चाहिये

११ प्रश्न—क्या वर्त्तमान् काल के ब्राह्मण और साधु लोगों का कर्तव्य नहीं है कि देश में धर्म के नाम से जोर कुरीति शास्त्र विरुद्ध चल रही हैं और प्रतिदिन उन्नति करती जाती हैं उन पर ध्यान देकर उन के रोकने का परिश्रम करें और उन के स्थान वैदिक कर्मों का प्रचार करें

(१) वैदिक षोडश संस्कार जिन से मनुष्य ब्राह्मण क्षत्री वैश्य आदि वर्णों का अधिकारी होता है उन में से पंजाब में एक भी संस्कार विधिपूर्वक नहीं होता है कभी किसी साधु या ब्राह्मण ने इस का चर्चा तक भी किया

(२) यदि ग्रामीन शठ मुसलमान एक सहस्र इकट्ठा किये जावें तो उन में एक भी ऐसा पाना कठिन होगा जो कलमा न जानता हो मसजदों में जाकर देखो कि कितने मुसलमान पांचों समय नमाजें पढते हैं पुनः अपने लोगों में दृष्टि करो कि एक सैकड़े में से कितने हिंदु हैं जो

गायत्री जानते और कितने संध्या करते हैं और कोई दिखलाया जा सका है कि जो गायत्री और संध्या के मंत्रों के अर्थ जानता हो इस पर कभी किसी महात्मा ने ध्यान भी दिया है और संध्या त्याग का जो दंड मनुस्मृति में लिखा है उस का कभी किसी ब्राह्मण ने वर्णन तक भी किया है जिस में स्पष्ट लिखा हुआ है कि जो ब्राह्मण आदि दोनों समय की संध्या में चूक करता है उस को अपने वर्ण के सब अधिकारों से पृथक् कर के शूद्र बना देना चाहिये ये उस का वर्णन किस प्रकार करें बोलें तो प्रथम पकड़े जायें क्या इस से अधिक भी कोई शोक की बात हो सक्ती है

(३) संस्कृत विद्या का सत्यानाश हो गया और मुरदा बोली उस का नाम रक्खा गया संस्कृत की पाठशाला बनाने या ग्रंथ एकत्र करने का कभी कोई ब्राह्मण या साधु नाम तक भी लेता है

(४) ब्राह्मण और क्षत्रियों की स्त्रियां मृतक मुसलमान फकीरों की कबरों को पूजती हैं जिन के प्रति कहा जाता है कि हिंदुवों को मारने पर शहीद अर्थात् जीवन मुक्त ठहराये गये थे और जो नाममात्र पुरुष हैं वे आप भी कबरों पर भेंट चढ़ाते हैं इस कुरीति के मिटाने में किसी महात्मा ने प्रयत्न किया

(५) सखीसरोवर के मकबरे पर लाखों हिंदु अब तक जाते और झूठा खाना खाते रहे हैं और कई मुरदा मुसलमानों की दरगाहों पर मथा टेकते हैं इस की किसी साधु वा ब्राह्मण को कभी लज्जा आयी है

(६) प्राय: ब्राह्मण लोग जैनी और डकौते नाई धोबी खटीक आदि नीचों का दान लेते हैं लेन देन और क्रय विक्रय व्यवहार में टांग अड़ाते हैं और दलाली खाते हैं और स्वयं निषिद्ध काम खुल्लं खुल्ला करते हैं मदरा पान करते मांस खाते जुआ और व्यभिचार करते और बहु२ वंज करते हैं जो कि मनुस्मृति में अतीव वर्जनीय हैं संध्या आदि के निकट नहीं जाते हैं इन बातों के सुधार पर कभी किसी का ध्यान हुआ है

(७) अग्निहोत्र आदि नित्यकर्म ऐसे लुप्त हो गये कि कोई नाम भी नहीं जानता इस वैदिक प्रजा हितकारी सुकर्म का व्याख्यान कहीं होता सुना गया है प्रत्युत जो लोग १ सब सत्यविद्या, और सत्यविद्या से जो पदार्थ जाने जाते हैं; उन सब का आदिमूल परमेश्वर को जानते हैं २ ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान् न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनूपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता जानते और उसी की उपासना करते हैं ३ वेद सत्यविद्याओं का पुस्तक और वेद का जान कर पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्य्यों का परम धर्म्म जानते हैं ४ सत्य ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहते हैं ५ सब काम धर्म्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य का विचार करना चाहते हैं ६ संसार का उपकार करना अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना अपना महान् कर्तव्य समझते हैं ७ सब से प्रीति पूर्वक, धर्म्मानुसार, यथा योग्य वर्तना चाहते हैं

अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहते हैं ९ और अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहकर सब की भलाई में अपनी भलाई समझते हैं १० और समाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र और प्रत्येक हितकारी नियम में स्वतन्त्र रहना चाहिते हैं और जो विद्वानों को देवता मानते और उन का सत्कार करते हैं और मूर्खों का नहीं करते और माता पिता की सेवा को पितृयज्ञ समझते और आचार्य अतिथि और धर्मात्माओं की सेवा में तन मन धन से मुख नहीं मोड़ते हैं उन लोगों पर मनुष्य दूषण लगाते हैं कि वह मूर्ख और निडर हैं और जो कुकर्मी ब्राह्मण और साधुओं की प्रतिष्टा नहीं करते और इस कारण से उन के साथ बड़ा द्वेष रखते हैं उन को किस शास्त्र और नीति से धर्मात्मा कहा जा सक्ता है

समाप्तिः

अब अपने देश के सब सज्जनों की सेवा में अत्यन्त नम्रता पूर्वक विनय है और छोटे बड़े सब भाईयों को अत्यन्त प्रेम से प्रकाशित किया जाता है कि जो कुछ ऊपर लिखा गया है उस में द्वेष और आग्रह लेश मात्र भी नहीं है प्रत्युत बड़ी प्रीति से यह प्रयत्न किया गया है कि आप अपने पारमार्थिक और सांसारिक दशा पर अच्छी प्रकार ध्यान दें कम से कम मनुस्मृति आदि धर्मशास्त्रों का श्रवण करके सुकर्म तथा कुकर्म के बीच विवेक किया करें और सत् और असत् को विचार कर चलें अर्थात् ओर२ दूषण अपने धार्मिक

और लौकिक आचार में हों उन को दूर करके सत् की ओर प्रवृत्त हों

३६—हमारा यह कदापि अभिप्राय नहीं है कि आप ब्राह्मणों का सत्कार न करें परन्तु जो धर्मात्मा विद्वान् और कर्मकांडी आप विद्या पढ़ते और अन्य पुरुषों को पढ़ाते हों आप संध्या अग्निहोत्र आदि प्रतिदिन करते और यजमान आदियों को कराते हों और वेदानुकूल व्यवहारों के प्रचार करने में परिश्रम करते हों और वेदविरुद्ध व्यवहार और रीतियों को रोकते हों उन सत्यपुरुष ब्राह्मणों को देवता मान कर उन की पूजा अर्थात् सेवा सत्कार और प्रतिष्ठा करना अपना मुख्य कर्तव्य समझना चाहिये

३७—परन्तु जो लोग अत्यन्त मूर्ख और स्वार्थी हैं उन का मान और सत्कार कदापि न किया जावे प्रत्युत उन से यथाशक्ति उपरति की जाय जिस से ऐसे लोगों को अपने सुधार का कुछ विचार हो यह भी कुछ अपनी ओर से हम नहीं कहते मनु महाराज की आप आज्ञा है

३८—आप लोगों को सोचना चाहिये कि जो अपठित नाम मात्र ब्राह्मण वेदमंत्रों के स्थान चंडीपाठ से हवन आदि वैदिक कर्म कराने में बड़ा प्रयत्न करते हैं यद्यपि वह रीति वेद के विरुद्ध और वाममार्गियों की बनाई हुई है और यह लोग वेदों से अधिक उस को केवल इस लिये प्रचलित करते हैं कि यदि हवन आदि कर्म वेदमंत्रों से उन को कराने पड़ें तो उन की कला खुल जावे क्योंकि वह लोग

वेदमंत्रों का पाठ मात्र भी उच्चारण नहीं कर सक्ते क्या ऐसे लोग जो अपने अल्प और मिथ्या प्रयोजन के अर्थ वेदों का अपमान कराने वाले हैं पूजने के योग्य हैं

३९—यह भी ज्ञात रहे कि ब्राह्मणों की प्राचीन पवित्र सुशील जाति को आप ही लोगों ने मूर्ख और आलसी बना दिया है क्योंकि मनुशास्त्र आदि का सुनना छोड़ देने से आप लोगों का परिज्ञान नहीं रहा कि किस गुण कर्म और स्वभाव के मनुष्य को ब्राह्मण मानना चाहिये और इस अज्ञान के कारण आप पंडित और मूर्ख दोनों की एक जैसी प्रतिष्ठा करने लगे जैसे मत्था टेकने और श्राद्ध आदि का धामा देने और दान पुण्य में जैसा पंडितों को भाग मिलता है वैसा ही अपठित मूर्खों को मिलता है अतएव यही कारण है कि ब्राह्मणों के हृदय से विद्या का मान और महत्व जाता रहा और विद्या के अभाव से सर्व सुकर्म और पुरुषार्थ नष्ट होगये मानो आप लोगों की ही कृपा से यह विद्यायुक्त जाति रसातल के द्वार तक पहुंच गई है यह तो आप की कृपा हुई शेष रही सही विद्या भंग चरस और अफीम ने निकाल दी और अब यह दशा है कि मानो आलस्य दरिद्र और कृपणता इन ही का पितृधन बन गया है और ईर्षा और द्वेष में सब से आगे बढ़े हुये हैं

४०—उजागर में तो आप अविद्वान् ब्राह्मणों का पक्ष करके उन के सहायक बने हुये हैं परन्तु वास्तव में यह सहायता उन के सत्यानाश का कारण हुई और हो रही है यदि आप लोग हृदय से उन के शुभ चिन्तक हैं और उन

की भलाई चाहते हैं तो थोड़ा शास्त्ररीति पर ध्यान अभी कम से कम यह उपाय तो ठहरायें कि जो ब्राह्मण दोनों समय संध्या और अग्निहोत्र न करें और आप विद्या अध्यायन के योग्य होकर विद्या न पढ़ें अथवा सन्तान को विद्या ग्रहण न करायें तो उन को श्राद्ध आदि का धांमा न देना चाहिये इतने मात्र ही से आप देखलेंगे कि सन्ध्या हीन कोई ब्राह्मण न रहजायगा इस के बिना विद्या की कदापि उन्नति नहीं होगी मूर्खों का आदर और सत्कार करके आप उन को मूर्ख बनने की प्रेरणा कर रहे हैं अतएव उचित है कि आप उस का कुछ प्रबन्ध करें

४१—इसी प्रकार अतिथि पूजा की दशा समझनी चाहिये कि जो आप्त पुरुष अर्थात् पूर्ण विद्वान् सत्य वादी सत् उपदेष्टा धर्मात्मा शुद्ध अन्तः करण वाले सत्य के शुभचिन्तक पुरुषार्थी ईश्वर भक्त आलस्य प्रमाद राग द्वेष और ईर्षा रहित हैं जो केवल जगत् के उपकार के अर्थ देश देशान्तरों में भ्रमण करके गृहस्थियों को सत् धर्म का उपदेश करते और सन्ध्या अग्निहोत्र आदि कर्मों में उन को लगाते हैं विद्या की वृद्धि और अविद्या का नाश करना जिन का मुख्य प्रयोजन है जो पूर्ण अतीत और विरक्त हैं और विषय भोग और स्त्रीदर्शन तक से कोसों भागने वाले हैं उन सज्जन और भद्र पुरुषों का बड़े उत्साह प्रेम और भक्ति से यथायोग्य सत्कार करना चाहिये क्योंकि विद्या धर्म धन और सुख की वृद्धि ऐसे ही महात्माओं के सत्संग से होनी संभव है

४२—प्रत्युत उन धूर्तों की संगति और आदर प्रतिष्ठा से पृथक रहना उचित है जो अहं ब्रह्म अर्थात् मैं परमेश्वर हूं ऐसा कहने वाले इन्द्रियों को भोग भुगाने वाले अभ्यास वैराग के शत्रु अभिमान का स्वरुप अहंकार के पात्र मान बड़ाई और कीर्ति के भूखे और बड़े यत्न के बिना चार पग नहीं चल सक्ते जो पदार्थसेवन का अवतार पेट के पूजक सत्य पूछो तो बड़े क्रूर और अधर्मी और अत्यंत निर्दयी हैं कि ऐसे दीन निर्धन गृहस्थियों का घर उजाड़ कर मालपुआ खाते दया नही करते जिन के बच्चे दमड़ी२ को गिड़ गड़ाते फिरते हैं और वह गृहस्थी प्राय: ऐसे दीन होते हैं कि उन धूर्तों के एक दिन के रातब का व्यय पूर्ण करने अर्थ जो वह ऋण लेते हैं वह ऋण उन के लिये बहुत काल प्रयन्त विपदा बना रहता है ईश्वर उपासना और अभ्यास आदि कर्तव्य जिन के स्वभाव के अत्यन्त प्रतिकूल हैं जो औरों को द्वेष के त्याग का उपदेश करतें हैं परन्तु आप द्वेष की अग्नि की भट्ठी बने रहते हैं दुष्ट हृदय बगुलाभगत ऊपर देखने में सुन्दर आयु: में युवान् मुख से जिन के रुधिर टपकता स्त्रियों को लुभाने के अर्थ पाखंड शृङ्गार और आडम्बर पर मरते हृष्ट पुष्ट देखने के भोले लोग प्रौढा युवा सुन्दर स्त्रियों को जिन के पतिव्रत में कलङ्क लगने की वह कभी चिन्ता भी नहीं करते हैं सदैव खुले दर्शनों की आज्ञा देने वाले हैं उन पुरुषों से सदैव पृथक् रहना उचित और योग्य है

४३—भला जो जिह्वा की लालसा और चाट को रोक नहीं सक्ते उन से काम आदि बलवान् विषयों का रोकना

क्योंकर संभव है जो आप सा
आधीन हैं वह अन्य लोगों के

४४—पुन: ऐसे लोगों के,
युवा विधवाओं के आने जाने को
बनाये रहना वा क्या अपनी लज्जा
दोनों हाथों से मुख काला करना नहीं

४५—स्त्रीरहित साधु लोगों को बड़े२ वारक और काम वर्धक पदार्थ खिला२ कर प्रत्यक्ष चर्य का जान बूझ कर भ्रष्ट करना नहीं तो और क्या है शोक है कि आप लोगों ने मुष्टंडों के पालन को अतिथि पूजा धर्म समझा हुआ है और इतना भी नहीं जानते कि साधु लोग सूक्ष्म और शान्ति दायक पदार्थों का सेवन किया करते हैं और स्त्रियों के सामीप्य को अपने लिये अग्नि और दारू का संयोग जानते हैं और आप लोग उस के प्रति कूल काम करते हैं

४६—और केचित् जो केवल खाने के लिये उत्पन्न हुये हैं और किसी प्रकार की भक्ति नही कर सक्ते और इस कारण से ऐसे मोटे हो गये हैं कि गर्भिनी भैंस के तुल्य अशक्य हैं और ऐसी दुर्दशा को पहुंच चुके हैं कि दिशा शौच के अर्थ पग से चल कर कुछ अन्तर पर जाना जिन के लिये अतीव विपत्ति है अद्यपर्यन्त उन को आप लोगों ने आप सांड बनाया हुआ है जान नहीं पड़ता कि उन की दुर्दशा आप इस से अधिक और क्या चाहते हैं जिन का श्वास भी मुटापे से कष्टत: आता जाता है जिन को देख

)

।। आजाती है बतलाईये कि
। हैं

शास्त्रोक्त रीति से विद्वानों का
। का प्रचार करो जिस से देशमें
और श्रेष्ट मर्यादा फैले और धर्म
नुष्यको देह रूपी बृक्ष के चार उत्तम
प्रकार सब को सर्वथा प्राप्त हों

अन्त को मैं इस पुस्तक को इस प्रार्थना के साथ समाप्त करता हूं कि हे दयामय सर्वान्तरयामी ज्ञानस्वरूप विश्वाधार जगत्पिता परमेश्वर आप अपनी परमकृपा और दयालुता से हम सब के हृदयों में विद्या का प्रकाश कर के असत् अविद्या अधर्म भ्रम भ्रान्ति और पाखंड का मूल से नाश करो जिस से हम सब लोग जो आप की प्रजा हैं सदैव परस्पर मित्रभाव को बढावें और उत्तम सुख युक्त रह कर आप की भक्ति प्रार्थना और उपासना से सद् ज्ञान को प्राप्त हों

ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

॥ इति ॥

गुरु विरजानन्द दण्डी
सद्धर्म पुस्तकालय
पु० परिग्रहण क्रमांक 1831 ..
आनन्द महिला मह... त्र

Text No. 1.—Scientific Exposition of the Atmosphere by the same ... 0 1 0

Vedic Text No. 2.—The Composition of Water, by the same ... 0 1 6

Vedic Text No. 3.—Grihastha by the same ... 0 1 6

Ishopanishad.—With an English Translation and Scientific Exposition on its Theology by the same, 0 6 0

Atheism and Agnosticism.—By Dwarka Das, Esq., M. A. ... 0 2 6

Dogmas of Christianity.—By Durga Prasad ... 0 2 0

Three Veda Mantra Sheets for walls with English and Hindi Translations ... 0 2 3

Chanikya Niti or Morals by Chanak 0 4 0

Postage on each ... 0 0 6

Liberal discount to wholesale dealers.

Apply to—DURGA PRASAD,
Manager,
VIRAJANAND PRESS, LAHORE.